International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

जंगल जहाँ शुरू होता है उपन्यास में चित्रित आदिवासी विमर्श

प्रा. देशमुख किरण अमृतराव
सहायक अध्यापक,
प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर
Corresponding Author – प्रा. देशमुख किरण अमृतराव
DOI - 10.5281/zenodo.18654544

प्रास्ताविक:

कहना सच होगा की वर्तमान में हिंदी साहित्य ने समाज में व्याप्त असमानताओं, संघर्षों और बदलावों को विमर्श के रूप में सामने रखा है। आधुनिक और समकालीन हिंदी साहित्य में अनेक प्रकार के विमर्श उभरकर सामने आए हैं। जैसे कि नारी विमर्श,दलित विमर्श,आदिवासी विमर्श,किसान विमर्श,वर्ग विमर्श,अल्पसंख्यक विमर्श,पर्यावरण विमर्श आदि। कहना आवश्यक नहीं कि हिंदी साहित्य में चित्रित विमर्शों ने साहित्य को जनोन्मुख, संवेदनशील और परिवर्तनकारी बनाया है। ये विमर्श समाज की वास्तविक समस्याओं को उजागर कर पाठक को सोचने और बदलाव की दिशा में प्रेरित करता परिलक्षित होता है। आदिवासी विमर्श का मूल उद्देश्य उस समाज को केंद्र में लाना है, जो लंबे समय तक मुख्यधारा के साहित्य और इतिहास से उपेक्षित रहा है।

आदिवासी विमर्श से तात्पर्य:

आदिवासी समाज को प्रायः ‘वनवासी’, ‘पिछड़ा’ या ‘असभ्य’ मानकर देखा गया, कहना ग़लत नहीं होगा की आदिवासी विमर्श याने ऐसा साहित्य है जिसमें आदिवासी जीवन की आत्मिकता, प्रकृति-निष्ठा और सामूहिक संस्कृति,औपनिवेशिक, सामंती और पूंजीवादी शक्तियों द्वारा किया गया शोषण,जल–जंगल–जमीन पर अधिकार का प्रश्न,पहचान, अस्मिता और स्वायत्तता का संघर्षमुख्य रूप से उभरकर सामने आते हैं।

आदिवासी विमर्श के परीप्रेक्ष में ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ उपन्यास का परीचय:

हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विशेष महत्त्व प्राप्त किया। लेखक संजीव का उपन्यास ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ इसी विमर्श की एक सशक्त कृति है। यह उपन्यास आदिवासी समाज के जीवन, संस्कृति, संघर्ष और शोषण को यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत करता है। उपन्यास में जल-जंगल-जमीन, विस्थापन, सत्ता-संरचना, प्रतिरोध चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे प्रश्नों को केंद्र में रखा गया है। संजीव आदिवासियों को मात्र पीड़ित समुदाय के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील और चेतन समाज के रूप में प्रस्तुत करते हैं। ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ हिंदी उपन्यास परंपरा में आदिवासी विमर्श की एक महत्त्वपूर्ण और वैचारिक रूप से प्रतिबद्ध कृति है।लेखक संजीव का उपन्यास ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ इसी उपेक्षित समाज की यथार्थपूर्ण कथा कहता है। यह उपन्यास विकास, सत्ता और पूँजी के नाम पर हो रहे आदिवासी शोषण का प्रामाणिक दस्तावेज़ है। संजीव अपने उपन्यास में आदिवासियों की पीड़ा, चेतना और प्रतिरोध को साहित्यिक रूप प्रदान करते हैं।

आदिवासी विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि:

आदिवासी विमर्श का संबंध केवल सामाजिक यथार्थ से नहीं, बल्कि राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना से भी है। यह विमर्श आदिवासियों के भूमि अधिकार, सांस्कृतिक अस्मिता और आत्मनिर्णय के प्रश्नों को उठाता है। रमणिका गुप्ता के अनुसार-"आदिवासी विमर्श का उद्देश्य आदिवासी समाज को दया का पात्र नहीं, बल्कि इतिहास का सक्रिय निर्माता मानना है "[1]।'जंगल जहाँ शुरू होता है' इसी दृष्टि को अपनाता है। यहाँ आदिवासी समाज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ता दिखाई देता है।

उपन्यास का कथ्य और सामाजिक यथार्थ:

उपन्यास का कथानक जंगल और उससे जुड़े आदिवासी जीवन पर आधारित है। जंगल यहाँ मात्र प्राकृतिक परिवेश नहीं, बल्कि आदिवासी जीवन की आत्मा है। उनका भोजन, आवास, संस्कृति और विश्वास—सब कुछ जंगल से जुड़ा हुआ है।इस संबंध में प्रा. उज्वला गाडे लिखती है-"आज जब हम आदिवासियों की स्थिति देखते हैं तब पता चलता है कि उन्हें विकास के नाम पर विस्थापित कर जंगलों से खदेड़ा जा रहा है"[2]।संजीव उपन्यास में यह स्पष्ट करते हैं कि तथाकथित विकास योजनाएँ किस प्रकार आदिवासी समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध होती हैं। खनन, उद्योग और सरकारी परियोजनाएँ आदिवासियों को उनकी जमीन से बेदखल कर देती हैं। यह स्थिति आदिवासी विमर्श के मूल प्रश्न को सामने लाती है।

जल-जंगल-जमीन का प्रश्न:

आदिवासी विमर्श में जल-जंगल-जमीन केंद्रीय मुद्दे हैं। उपन्यास में जंगल को माँ के रूप में देखा गया है, जो आदिवासियों को जीवन देता है। जब जंगल कटता है, तो केवल पेड़ नहीं गिरते, बल्कि आदिवासियों की संस्कृति और पहचान भी नष्ट होती है।प्रस्तुत उपन्यास का पात्र बिसराम अपने छोटे भाई काली से कहता है- "प्रधानमंत्री आए चाहे प्रधानमंत्री का बाप हमको तो यही नर्क में रहना है"[3]।संजीव दिखाते हैं कि आधुनिक सभ्यता प्रकृति को उपभोग की वस्तु मानती है, जबकि आदिवासी उसे जीवन का आधार मानते हैं। यही दृष्टि-भेद संघर्ष का कारण बनता है।

शोषण तथा सत्ता-संरचना की असमानता:

उपन्यास में आदिवासी शोषण के अनेक रूप चित्रित हैं। सरकारी अधिकारी, ठेकेदार और पूँजीपति विकास के नाम पर आदिवासियों का शोषण करते हैं। उन्हें निर्णय-प्रक्रिया से बाहर रखा जाता है। यह स्थिति सत्ता-संरचना की असमानता को उजागर करती है।प्रस्तुत रचना में सांप के काटने से आदिवासी लड़की की मौत हो जाती है पुलिस अधिकारी जब पूछता है तो लड़की का पिता रोते हुए कहता है- " हमारा तो हर तरीका से मौवत लिखत बा.. जमींदार से, डाकू से, देवता पिता से, बूत भवानी से ,पुलिस से, लेखपाल से" [4]संजीव का उपन्यास इस शोषण की तीखी आलोचना करता है और यह स्थापित करता है कि आदिवासियों की समस्या केवल आर्थिक नहीं, बल्कि राजनीतिक भी है।

चेतना और प्रतिरोध:

'जंगल जहाँ शुरू होता है' में आदिवासी समाज को निष्क्रिय नहीं दिखाया गया है। उपन्यास में उनकी चेतना और प्रतिरोध स्पष्ट रूप से उभरता है। वे अपने जंगल और जमीन की रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास का पात्र काली अपने अधिकार के लिए डाकू बना है वह अपना अधिकार जताते हुए कब्जा करने वाले गांव वालों को धमकता है कहता है "कान खोलकर सुन लीजिए जो कोई

आज की घड़ी से इनकी कोई चीज हड़पने चाहेगा खेत पर अपना कब्ज जमाएगा काली सरदार का फरमान है कि जो कोई किसी की आबरू की और आंख उठा कर देखेगा उसकी आंख निकाली जाएगी"[5]।यह प्रतिरोध आदिवासी विमर्श का सशक्त पक्ष है, जो उन्हें संघर्षशील समुदाय के रूप में स्थापित करता है।

संस्कृति तथा अस्मिता:

उपन्यास में आदिवासी संस्कृति का जीवंत चित्रण मिलता है। उनके गीत, नृत्य, पर्व-त्योहार और सामूहिक जीवन-शैली उनकी सांस्कृतिक पहचान को रेखांकित करते हैं। आदिवासी परिवारों में लखराव नमक एक पूजा विधि है इस संबंध में कहा गया है- "इसमें भगवान शिव का विधिवत पूजन किया जाता है ,एक लाख पुष्प या एक लाख बेलपत्र ओम नमः शिवाय के साथ प अर्पित करें, समाप्ति पर एक सुवर्ण बेलपत्र शिव को अर्पित करें.... इस से पापों का नाश होता है"[6]।संजीव यह दिखाते हैं कि आदिवासी संस्कृति प्रकृति-केन्द्रित और सामूहिक मूल्यों पर आधारित है, जो आधुनिक भौतिकतावादी संस्कृति से भिन्न है।

यह सांस्कृतिक चित्रण आदिवासी अस्मिता को सुदृढ़ करता है और विमर्श को गहराई प्रदान करता है।

भाषा तथा शिल्प:

संजीव की भाषा यथार्थवादी और संवेदनशील है। उपन्यास में वर्णन और संवाद दोनों में आदिवासी जीवन की सच्चाई झलकती है। लोकजीवन से जुड़े शब्द और प्रतीक उपन्यास को प्रामाणिक बनाते हैं।आयसन मत बोल-अ, एकरा से और बुरा का करिहें हमारा?ई कैसन, आदि देशी शब्दों का इस्तेमाल सुंदर तरीके से किया है साथ ही जर्नलिस्ट, यूनियन, डाक्यूमेंट,हेल्प , प्लीज़ आदि अंग्रेजी शब्दों का भी उपयोग आवश्यकता अनुसार हुआ है। शिल्प की दृष्टि से यह उपन्यास प्रतिबद्ध साहित्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लेखक संजीव का उपन्यास 'जंगल जहाँ शुरू होता है' हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श की एक महत्त्वपूर्ण कृति है। यह उपन्यास आदिवासी जीवन की जटिलताओं, उनके शोषण, संघर्ष और सांस्कृतिक अस्मिता को व्यापक सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में प्रस्तुत करता है। संजीव आदिवासियों को साहित्य के केंद्र में लाकर उनकी आवाज़ को मजबूती देते हैं। यह कृति न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक चेतना की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।कहना आवश्यक नहीं कि हिंदी उपन्यास परंपरा में आदिवासी विमर्श उस साहित्यिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, जो भारत के मूल निवासियों के जीवन, संस्कृति, संघर्ष, शोषण और विद्रोह स्पष्ट करता है।

संदर्भ सूची:

1. रमणिका गुप्ता – आदिवासी विमर्श और हिंदी साहित्य, पृष्ठ- 45
2. हिंदी साहित्य विविध विमर्श -डॉ.अर्चना परदेशी, पृ- 80
3. जंगल जहां शुरू होता है- संजीव, पृ-29
4. जंगल जहां शुरू होता है –संजीव, पृ-21
5. जंगल जहां शुरू होता है- संजीव, पृ-247
6. जंगल जहां शुरू होता है -संजीव ,पृ-143